अध्याय – 15

राष्ट्रीय आय से सम्बन्धित सम्मुच्चय
(National Income And Its Related Aggregates)

अर्थशास्त्र में एक देश के आय स्तर (राष्ट्रीय आय) का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। आर्थिक वृद्धि की गणना के लिए राष्ट्रीय आय का सबसे पहले प्रयोग प्रो. साइमन कुजनेट्स ने 1934 में किया। भारत में भी राष्ट्रीय आय का अध्ययन व आंकलन कई विद्वानों द्वारा किया गया है। स्वतंत्रता से पूर्व भारत में राष्ट्रीय आय के अनुमान दादा भाई नौरोजी(1868), विलियम डिग्बी(1899), फिण्डले सिराज (1911, 1922 व 1931), शाह व खम्भर(1921), डॉ. वी. के. आर. वी. राव(1925– 1929), व सी. आर. देसाई (1931–1940) के द्वारा लगाये गये थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राष्ट्रीय आय के अनुमान के लिए एक राष्ट्रीय आय समिति का गठन किया गया। राष्ट्रीय आय समिति का गठन प्रो. प्रफुल्ल चन्द्र महलनोबिस (1949) की अध्यक्षता में हुआ। उक्त समिति के सदस्य–सलाहकार प्रो. साइमन कुजनेट्स थे। 1956 से ही प्रतिवर्ष केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन (CSO) द्वारा भारत की राष्ट्रीय आय के अनुमान प्रकाशित किये जाते हैं।

राष्ट्रीय आय का अर्थ एवं परिभाषाएँ– राष्ट्रीय आय को समझने के लिए इसकी परिभाषाओं पर विचार करना आवश्यक है। राष्ट्रीय आय की प्रमुख परिभाषाओं में मार्शल, पीगू, फिशर व साइमन कुजनेट्स की परिभाषाएँ महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।

मार्शल के अनुसार–''किसी एक देश का श्रम तथा पूँजी उसके प्राकृतिक साधनों पर क्रियाशील होकर प्रतिवर्ष भौतिक वस्तुओं व अभौतिक वस्तुओं का एक शुद्ध योगफल पैदा करता है जिसमें सभी प्रकार की सेवाएं सम्मिलित होती हैं। यही उस देश की वास्तविक शुद्ध वार्षिक आय या देश का राजस्व या राष्ट्रीय लाभाशं है।''

पीगू के अनुसार–''राष्ट्रीय आय समाज की वस्तुपरक आय का वह भाग है जो कि मुद्रा में मापा जा सकता है और इसमें विदेशों से प्राप्त आय भी सम्मिलित होती है।''

फिशर के अनुसार–''राष्ट्रीय लाभाशं अथवा आय में केवल अन्तिम उपभोक्ताओं द्वारा प्राप्त सेवाएं सम्मिलित होती हैं, चाहे वे भौतिक या मानवीय वातावरण से प्राप्त हों। इस प्रकार एक पियानो या ओवरकोट जो मेरे लिए इस वर्ष बनाया गया है, इस वर्ष की आय का भाग नहीं है वरन् पूँजी में वृद्धि है। केवल इन वस्तुओं द्वारा मेरे लिए इस वर्ष की गई सेवाएं ही आय है।''

साइमन कुजनेट्स द्वारा दी गयी निम्न परिभाषा को आधुनिक मानते हैं :– 'राष्ट्रीय आय वस्तुओं व सेवाओं का वह शुद्ध उत्पादन है जो एक वर्ष की अवधि में देश की उत्पादन–प्रणाली से अन्तिम उपभोक्ताओं के हाथों में पहुँचता है।' सरल शब्दों में 'एक वित्तीय–वर्ष की अवधि में देश के निवासियों द्वारा उत्पादित अन्तिम उपभोग्य–वस्तुओं व सेवाओं की शुद्ध मात्रा के प्रचलित बाजार कीमत पर उस देश की मुद्रा में व्यक्त मूल्यों के योग को राष्ट्रीय आय का प्रवाह कहते हैं। यहाँ अन्तिम उपभोग्य–वस्तुओं व सेवाओं का अभिप्राय उन वस्तुओं व सेवाओं से होता है जिनका उपभोग एक उपभोक्ता अथवा एक उत्पादक द्वारा किया जाता है।

मार्शल ने एक देश में एक वर्ष की समय–अवधि में राष्ट्रीय आय को भौतिक वस्तुओं व अभौतिक वस्तुओं (सेवाओं) के शुद्ध उत्पादन के योग के रूप में परिभाषित किया है। पीगू ने राष्ट्रीय आय को उत्पादन के मुद्रा में मापनीय मूल्य के योग के रूप में परिभाषित किया है। फिशर ने उत्पादन के स्थान पर उपभोग को राष्ट्रीय आय की गणना का आधार बनाया। फिशर ने राष्ट्रीय आय को एक वर्ष की समय–अवधि में भौतिक वस्तुओं व अभौतिक वस्तुओं (सेवाओं) के शुद्ध उत्पादन में से वह भाग जिसे सेवा के रूप में प्राप्त किया गया अर्थात जिस भाग का उपभोग हुआ उसी को राष्ट्रीय आय माना है।

राष्ट्रीय आय की विशेषताएँ– उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर राष्ट्रीय आय की निम्न विशेषताएँ हैं–

1. राष्ट्रीय आय का सम्बन्ध एक देश की अर्थव्यवस्था से होता है।
2. राष्ट्रीय आय का सम्बन्ध एक निश्चित अवधि, जो सामान्यतः एक वित्तीय–वर्ष की होती है, (भारत में एक अप्रेल से अगले वर्ष के 31 मार्च तक)।
3. राष्ट्रीय आय का सम्बन्ध एक देश के निवासियों की आर्थिक–क्रियाओं से होता है किन्तु वर्तमान में देश के भौगोलिक क्षेत्र में निवासियों और गैर निवासियों की

आर्थिक–क्रियाओं का अध्ययन भी इसमें शामिल होता है।

4. राष्ट्रीय आय का सम्बन्ध उत्पादक आर्थिक–क्रियाओं से होता है अर्थात इसमें अनुत्पादक–क्रियाओं को सम्मिलित नहीं किया जाता है।
5. राष्ट्रीय आय की गणना का सम्बन्ध अन्तिम उपभोग्य–वस्तुओं व सेवाओं के उत्पादन से होता है अर्थात इसमें अन्तरिम (अर्ध निर्मित या मध्यवर्ती) वस्तुओं व सेवाओं के उत्पादन को सम्मिलित नहीं किया जाता है।
6. राष्ट्रीय आय की गणना प्रचलित बाजार कीमत पर की जाती है।
7. राष्ट्रीय आय की गणना देश की मुद्रा में व्यक्त की जाती है।
8. राष्ट्रीय आय की गणना विभिन्न–वस्तुओं व सेवाओं के मूल्यों का योग होती है।
9. राष्ट्रीय आय एक प्रकार का प्रवाह होता है तथा यह एक प्रकार का भण्डार/स्कन्ध (Stock) नहीं होता है।
10. राष्ट्रीय आय की गणना शुद्ध मात्रा के अनुसार की जाती है अर्थात इसमें से घिसावट (मूल्यह्रास) को घटाया जाता है।

राष्ट्रीय आय की विभिन्न अवधारणाएँ

राष्ट्रीय आय की गणना दो आधारों पर की जाती है–

1. भौगोलिक आधार पर 2. राजनैतिक आधार पर

1. भौगोलिक आधार पर–

घरेलू आधार पर राष्ट्रीय आय की गणना करने हेतु एक देश की भौगोलिक–सीमा के आधार पर अध्ययन किया जाता है। एक देश की भौगोलिक–सीमा में निवासियों व विदेशी निवासियों, कम्पनियों के द्वारा होने वाले कुल उत्पादन के मूल्यों को जोड़ते हुए सकल घरेलू–उत्पाद (GDP) का स्तर ज्ञात किया जाता है।

2. राजनैतिक आधार पर–

राष्ट्रीय आय की गणना राजनैतिक आधार पर करने के लिए देश की नागरिकता पर विचार करते हैं। एक देश की नागरिकता जिनके पास होती है, उन लोगों के द्वारा भौगोलिक–सीमा में व दूसरे देशों की भौगोलिक–सीमा में अर्जित आय पर विचार होता है। इस प्रकार एक देश के निवासियों (नागरिकों) द्वारा भौगोलिक–सीमा में व दूसरे देशों की भौगोलिक–सीमा में किये गये उत्पादन के मूल्यों को जोड़ते हैं। एक देश के निवासियों (नागरिकों) ने कहीं भी उत्पादन किया हो, उसकी सहायता से सकल राष्ट्रीय–उत्पाद (GNP) का स्तर ज्ञात किया जाता है। उक्त विवरण निम्न चित्र से स्पष्ट हैं–

राष्ट्रीय आय से सम्बन्धित कई अवधारणाएँ हैं जिनकी विवेचना निम्नानुसार है:–

1. बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद (GDP_{MP}):–

एक देश की भौगोलिक–सीमा के भीतर देश के निवासियों व विदेशी निवासियों, कम्पनियों के द्वारा उत्पादित अन्तिम वस्तुओं व सेवाओं के मूल्यों का योग और अर्द्धनिर्मित वस्तुओं व सेवाओं (Inventory) के भण्डार में वृद्धि सकल घरेलू उत्पाद (GDP_{MP}) कहलाता है।

$$GDP_{MP} = C+I+G+(X-M)$$

जहाँ:– C = उपभोग व्यय
I = विनियोग व्यय
G = सरकारी व्यय
X-M = शुद्ध निर्यात

(अ) बाजार कीमत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP_{MP}) बाजार कीमत पर शुद्ध घरेलू–उत्पाद ज्ञात करने के लिए बाजार कीमत पर सकल घरेलू–उत्पाद में से से घिसावट (मूल्यह्रास) को घटाया जाता है।

$$NDP_{MP} = GDP_{MP} - D$$

जहाँ:– D = घिसावट है।

(ख) साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP_{FC}) साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद ज्ञात करने के लिए बाजार कीमत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद में से से अप्रत्यक्ष कर को घटाया जाता है और अनुदानों को जोड़ा जाता है।

$$NDP_{FC} = NDP_{MP} - IT+S$$

जहाँ:– IT = अप्रत्यक्ष कर
S = अनुदान

2. बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय–उत्पाद (GNP_{MP}):–

सकल राष्ट्रीय–उत्पाद एक देश की भौगोलिक–सीमा में में एक वर्ष की अवधि में देश के निवासियों व विदेशों में उसी देश के निवासियों, कम्पनियों के द्वारा उत्पादित अन्तिम वस्तुओं व

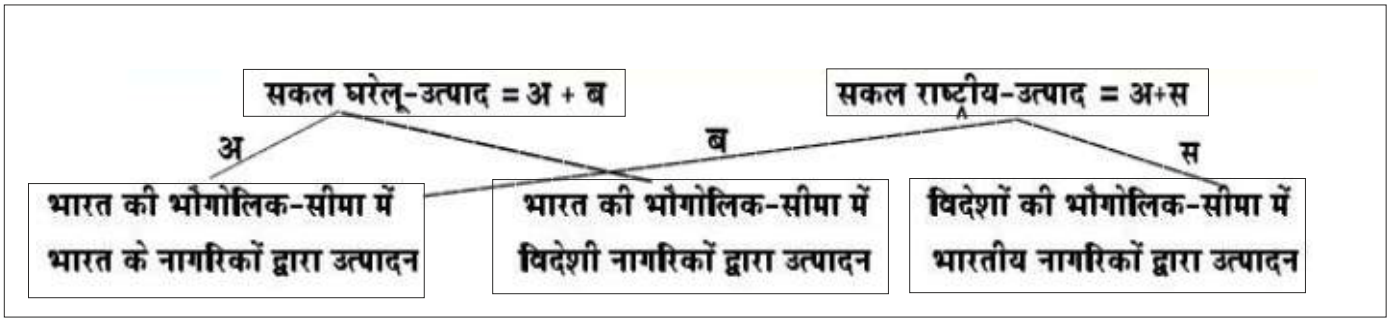

सेवाओं के मूल्यों का मौद्रिक माप है। अर्द्धनिर्मित वस्तुओं व सेवाओं (Inventory) के भण्डार में वृद्धि सकल राष्ट्रीय–उत्पाद (GNP_{MP}) कहलाता है। वास्तविक उत्पादन को ज्ञात करना है तो सकल राष्ट्रीय–उत्पाद को कीमत परिवर्तनों के लिए समायोजित करना पड़ता है। सकल राष्ट्रीय–उत्पाद में निम्न तत्वों को शामिल किया जाता है।

$$\mathbf{GNP_{MP}} = GDP_{MP} + NFIA$$

जहाँः– NFIA = विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय,
X-M = शुद्ध निर्यात

या $\mathbf{GNP_{MP}} = C+I+G+NFIA+(X-M)$

1– एक वर्ष की अवधि में उत्पादित अन्तिम वस्तुओं व सेवाओं के मूल्य जिन्हें घरेलु क्षेत्र द्वारा उपभोग किया जाता है जिसे C द्वारा दर्शाया जाता है।

2–एक वर्ष की अवधि में उत्पादित पूँजीगत वस्तुएं जिसमें निर्मित व अर्द्धनिर्मित वस्तुओं की माल सूचियां, स्थिर पूँजी निर्माण आदि शामिल होता है जिसे I द्वारा दर्शाया जाता है।

3–सरकार द्वारा वस्तुओं व सेवाओं पर किया गया व्यय अथवा चुकाया गया मूल्य जिसे G द्वारा दर्शाया जाता है।

4– अपने भौतिक या मानवीय साधनों द्वारा अन्य देशों में अर्जित आय और इसी प्रकार अन्य देशों के भौतिक या मानवीय साधनों द्वारा अपने देश में अर्जित आय का अंतर शुद्ध साधन आय कहलाती है। विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय को NFIA द्वारा दर्शाया जाता है।

5–इस प्रकार घरेलू निर्यातों के मूल्य में से विदेशी आयातों के मूल्य को घटाने पर शुद्ध निर्यात मूल्य प्राप्त होता है। जिसे X-M द्वारा दर्शाया जाता है।

3. बाजार कीमत पर शुद्ध राष्ट्रीय–उत्पाद ($\mathbf{NNP_{MP}}$):–

वस्तुओं व सेवाओं के उत्पादन में स्थिर पूँजी का उपयोग होता है उत्पादन प्रक्रिया के दौरान मशीनें घिस जाती हैं, अथवा उनमें टूट–फूट हो जाती है। कभी–कभी आविष्कार के कारण पुरानी मशीनें अनुपयोगी हो जाती हैं। इस प्रकार संसाधनों की उत्पादन–क्षमता में कमी या ह्रास होने के कारण सकल राष्ट्रीय–उत्पाद (GNP_{MP}) में से इस मूल्य को घटा दिया जाता है। बाजार कीमत पर शुद्ध राष्ट्रीय–उत्पाद गणना के द्वारा एक देश की अर्थव्यवस्था का सही–सही आंकलन किया जा सकता है। इस प्रकार घिसावट (मूल्यह्रास) को घटाकर शुद्ध राष्ट्रीय–उत्पाद (NNP_{MP}) की गणना निम्न प्रकार करते हैं–

$$\mathbf{NNP_{MP}} = GNP_{MP} - D$$

जहाँः– D = घिसावट है।

4. साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय–उत्पाद ($\mathbf{NNP_{FC}}$):–

एक देश में उत्पादित होने वाले वस्तु/सेवा के उत्पादन के लिए साधनों पर किया गया व्यय साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय–उत्पाद होता है। जैसे– श्रम की लागत–मजदूरी, पूँजी के उपयोग की लागत–ब्याज, भूमि के उपयोग की लागत–लगान, उद्यमशीलता के उपयोग की लागत–लाभ इत्यादि के रूप कुल लागत कहलाती है। सरकार द्वारा लगाया गया अप्रत्यक्ष–कर (Indirect Tax) घटाते हैं व सरकार द्वारा दी गई छूट या अनुदान (Subsidy) जोड़ कर साधन–लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद की गणना की जाती है।

$$\mathbf{NNP_{FC}} = NNP_{MP} - IT + S$$

जहाँः– I T = अप्रत्यक्ष कर
ड = अनुदान

या $\mathbf{NNP_{FC}} = R+I+W+P$

जहाँः– R = लगाान
I = ब्याज
W = मजदूरी
P = लाभ

एक देश की राष्ट्रीय–आय का सर्वाधिक उपयुक्त माप उसकी साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय–उत्पाद (NNP_{FC}) ही होता है।

5 निजी आय (Private Income) :–

निजी आय में सभी निजी क्षेत्र द्वारा उत्पादित आय अथवा अन्य किन्हीं स्त्रोतों से प्राप्त आय एवं निगमों द्वारा रखी गई आय शामिल होती है। साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय–उत्पाद में जिन मदों को शामिल किया जाता है वे हैं सरकार व विदेशों से प्राप्त हस्तांतरण भुगतान (बेरोजगारी भत्ता, पेंशन), राष्ट्रीय ऋणों पर ब्याज, उपहार और अप्रत्याशित लाभ। जबकि जिन मदों को हम घटाते हैं वे हें सरकारी उद्यमों और सम्पत्ति से प्राप्त आय, गैर विभागीय बचतें और सामाजिक सुरक्षा अंशदान (भविष्य निधि, जीवन बीमा), इत्यादि। निजी आय निम्न प्रकार से ज्ञात की जाती है–

$$\mathbf{Private\ Income} = (NNP_{FC}) + TP + IPD - CSS - PPU$$

जहाँः– TP = सरकार व विदेशों से प्राप्त हस्तांतरण भुगतान
IPD = सार्वजनिक ऋणों पर ब्याज
CSS = सामाजिक सुरक्षा अंशदान
PPU = सार्वजनिक उपक्रमों के अतिरेक लाभ

6. व्यक्तिगत आय (PI):–

व्यक्तिगत आय उन सभी आय का योग होती है जो वास्तव में व्यक्तियों अथवा घरेलू क्षेत्र द्वारा प्राप्त होती है। व्यक्तिगत आय को निम्नानुसार ज्ञात किया जाता है–

व्यक्तिगत आय **(PI)** = NNP_{FC} - अवितरित निगम लाभ - निगम–कर-सामाजिक सुरक्षा अंशदान + हस्तांतरण भुगतान +

सार्वजनिक ऋण पर ब्याज

(PI) = NNP_{FC} -UCP-CT-CSS+TP+IPD

जहाँ:– UCP= अवितरित निगम लाभ

CT= निगम कर

CSS = सामाजिक सुरक्षा अंशदान

TP = हस्तांतरण भुगतान

IPD = सार्वजनिक ऋण पर ब्याज

हस्तान्तरण भुगतान वे भुगतान हैं जो किसी सेवा की ऐवज में नहीं दिये जाते, अपितु सामाजिक सुरक्षा के तहत कमजोर वर्ग को सरकार की और से प्रदान किये जाते हैं। जैसे – पेंशन, बेरोजगारी भत्ता, विकलांगों को सहायता। इसमें क्रय शक्ति का हस्तान्तरण एक समुह से दूसरे समुह को होता है।

7. व्यक्तिगत खर्च योग्य आय (PDI):–

एक व्यक्ति की खर्च योग्य आय (PDI) व्यक्तिगत आय में से व्यक्तियों के आयकर व व्यक्तियों की फीस, जुर्माने घटाकर ज्ञात की जाती है–

व्यक्तिगत खर्च योग्य आय **(PDI)** = व्यक्तिगत आय (PI) -(व्यक्तियों के आयकरं) -(व्यक्तियों की फीस, जुर्माने)

प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय **(PCI)**:– किसी देश की राष्ट्रीय–आय के साथ–साथ उसकी प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय (PCI) का भी बहुत महत्व होता है। प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय (PCI) का मूल्यांकन राष्ट्रीय आय को किसी देश की जनसंख्या का भाग देकर निम्नानुसार ज्ञात किया जाता है–

प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय **(PCI)** = राष्ट्रीय आय (NI) में देश की जनसंख्या का भाग देने पर प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय प्राप्त होती है।

8 राष्ट्रीय खर्चयोग्य आय (National Dispsable Income) :–

एक देश की अर्थव्यवस्था के लोगों को विभिन्न वस्तुओं व सेवाओं की उपलब्धता का स्तर ज्ञात करते हुए जीवन–स्तर का आंकलन किया जा सकता है। सामान्यतः वस्तुओं व सेवाओं की उपलब्धता का स्तर राष्ट्रीय खर्चयोग्य–आय **(National Dispsable Income)** की गणना द्वारा किया जा सकता है। राष्ट्रीय खर्चयोग्य–आय की गणना करते समय शुद्ध अप्रत्यक्ष कर (Net Indirect Tax) व शेष विश्व से शुद्ध हस्तान्तरण आय (Net Transfer Earning from Rest of the World) को भी सम्मिलित करते हैं। शुद्ध अप्रत्यक्ष कर व शेष विश्व से शुद्ध हस्तान्तरण आय के द्वारा सरकारों की इच्छा अनुसार खर्च करने की क्षमता बढ़ती है इसलिए इनको राष्ट्रीय खर्चयोग्य–आय की गणना करते समय सम्मिलित करते हैं। एक व्यक्ति की खर्चयोग्य–आय (PDI) की भाँति राष्ट्रीय खर्चयोग्य–आय की संरचना के निम्न घटक होते हैं:– 1. सरकारी अन्तिम उपभोग–व्यय, 2. निजी अन्तिम उपभोग–व्यय व 3. बचतें।

NDI = NI + NIT + NTEW

जहाँ:– NIT = Net Indirect Tax, NI = National Income

NTEW=Net Transfer Earning from Rest of the World

भारत में राष्ट्रीय आय की गणना : संख्यात्मक उदाहरण:– एक देश की राष्ट्रीय–आय की निम्न सूचनाओं के आधार पर राष्ट्रीय–आय के निम्न विभिन्न घटकों – बाजार कीमत पर शुद्ध घरेलू–उत्पाद (NDP_{MP}), साधन लागत पर शुद्ध घरेलू–उत्पाद (NDP_{FC}), बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय–उत्पाद (GNP_{MP}), बाजार कीमत पर शुद्ध राष्ट्रीय–उत्पाद (NNP_{MP}), साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय–उत्पाद (NNP_{FC}), निजी आय (PI), व्यक्तिगत–आय (Per I), व्यक्तिगत खर्चयोग्य–आय (PDI व प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय–आय (PCI) की गणना कीजिए।

1. बाजार कीमत पर सकल घरेलू–उत्पाद (GDP_{MP}) = 4,00,000 करोड़ रू.
2. शुद्ध विदेशी–निर्यात से आय (X-M) = 10,000 करोड़ रू.
3. D घिसावट =10,000 करोड़ रू.
4. अप्रत्यक्ष–कर, I T= 10,000 करोड़ रू.
5. अनुदान S = 5,000 करोड़ रू.
6. देश की जनसंख्या= 100 करोड़
7. सरकारी विभागों जैसे रेल विभाग की आय = 10,000 करोड़ रू.
8. सरकारी गैर–विभाग जैसे स्टेट बैंक के लाभ = 10,000 करोड़ रू.
9. सरकारी कर्मचारियों द्वारा पेंशन इत्यादि हेतु चुकाया अंशदान= 5,000 करोड़ रू.
10. सरकार से व्यक्तियों को चालू वर्ष की प्राप्तियाँ = 5,000 करोड़ रू.
11. विदेशों से व्यक्तियों को चालू वर्ष की प्राप्तियाँ = 2,000 करोड़ रू.
12. सरकारी ऋणों पर ब्याज प्राप्तियाँ = 3,000 करोड़ रू.
13. निजी कम्पनी की बचतें = 10,000 करोड़ रू.
14. निजी कम्पनी के निगम–कर = 15,000 करोड़ रू.
15. व्यक्तियों के आयकर = 10,000 करोड़ रू.
16. व्यक्तियों की फीस = 4,000 करोड़ रू.
17. जुर्माने = 2,000 करोड़ रू.

संख्यात्मक उदाहरण का हल:–

1. बाजार कीमत पर शुद्ध घरेलू–उत्पाद (NDP_{MP}) = (GDP_{MP}) – D = 4,00,000–10,000=3,90,000 करोड़ रू.
2. साधन लागत पर शुद्ध घरेलू–उत्पाद (NDP_{FC}) = (NDP_{MP}) – IT + S = 3,90,000 – 10,000 + 5000 = 3,85,000 करोड़ रू.
3. बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय–उत्पाद (GNP_{MP}) = (GDP_{MP}) + शुद्ध विदेशी–आय
   = 4,00,000 + 10,000=4,10,000 करोड़ रू.
4. बाजार कीमत पर शुद्ध राष्ट्रीय–उत्पाद (NNP_{MP}) = (GNP_{MP}) - D = 4,10,000 – 10,000 = 4,00,000 करोड़ रू.
5. साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय–उत्पाद (NNP_{FC}) = (NNP_{MP}) - IT+S = 4,00,000 – 10,000 + 5,000=3,95,000 करोड़ रू.
6. निजी आय (PI) = शुद्ध राष्ट्रीय–उत्पाद (NNP_{FC}) - (सरकारी विभाग जैसे रेल विभाग की आय + सरकारी गैर–विभाग जैसे स्टेट बैंक के लाभ + सरकारी कर्मचारियों द्वारा पेंशन इत्यादि हेतु चुकाया अंशदान)+ (सरकार से चालू वर्ष की प्राप्तियाँ + विदेशों से चालू वर्ष की प्राप्तियाँ + सरकारी ऋणों पर ब्याज प्राप्तियाँ) = 3,95,000 - (10,000+10,000 +5,000)+ (5,000+2,000 +3,000) = 3,80,000 करोड़ रू.
7. व्यक्तिगत–आय (Per I) = निजी आय (PI) -(निजी कम्पनी की बचतें) - (निजी कम्पनी के निगम–कर)
   3,80,000–(10,000)–(15000) = 3,55,000 करोड़ रू.
8. व्यक्तिगत खर्चयोग्य–आय (PDI) = व्यक्तिगत–आय (Per I) - (व्यक्तियों के आयकरं) - (व्यक्तियों की फीस + जुर्माने) = 3,55,000–(10,000) – (4000) – (2000) = 3,39,000 करोड़ रू.
9. प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय–आय (PCI) = राष्ट्रीय–आय (NI) / देश की जनसंख्या
   = 3,95,000 करोड़ रू. / 100 करोड = 3,950 रू. प्रति व्यक्ति

राष्ट्रीय आय के माप की कठिनाइयाँ:–

राष्ट्रीय–आय का माप करते समय विभिन्न प्रकार की कठिनाइयाँ आती हैं। कुछ कठिनाइयाँ सैद्धान्तिक होती हैं। प्रमुख कठिनाइयाँ निम्न प्रकार हैं:–

1. स्वयं के रोजगार से प्राप्त आय की गणना कठिन कार्य है।
2. पुरानी, अन्तरिम व मध्यवर्ती वस्तुओं के मूल्यांकन की कठिनाइयाँ
3. अंशपत्र व ऋणपत्रों के बाजार के लेनदेन केवल कागजी क्रियाएँ होने से राष्ट्रीय–आय में नहीं गिनी जाती है।
4. गैर कानूनी क्रियाएँ व काला–बाजार की आर्थिक–क्रियाएँ भी सैद्धान्तिक कठिनाइयाँ पैदा करती हैं।
5. आराम के लिए अवकाश इत्यादि गणना कठिन कार्य है।

राष्ट्रीय आय का महत्व :–

राष्ट्रीय–आय का बहुत महत्व होता है। राष्ट्रीय–आय एक देश की अर्थव्यवस्था का दर्पण होता है। राष्ट्रीय–आय का मूल्यांकन एक देश की सही आर्थिक जानकारी प्रस्तुत करता है। सरकारों को राष्ट्रीय–आय की गणना के द्वारा उचित आर्थिक नीतियाँ बनाने में मदद मिलती है। देश में राष्ट्रीय–आय के आंकड़ो का उपयोग आय के समान वितरण, रोजगार में वृद्धि हेतु किया जाता है। एक देश के विभिन्न भागों (Regional) की आर्थिक प्रगति में असमानता का पता राष्ट्रीय–आय की वितरण से चल सकता है। क्षैत्रीय–असमानता दूर करने हेतु नीति बनाने में राष्ट्रीय–आय के आंकड़ो का बहुत उपयोग होता है। संसार के देशों की तुलना करने के लिए भी राष्ट्रीय–आय का अध्ययन सहायक होता है।

राष्ट्रीय–आय के आंकड़ो के आधार पर कृषि व पशुपालन के समुचित विकास की रण–नीतियाँ बनायी जाती है। प्रत्येक देश अपने उद्योग, व्यापार एवं अन्य वाणिज्यिक क्रियाओं के विस्तार का मूल्यांकन राष्ट्रीय–आय के आधार पर करता है। राष्ट्रीय–आय के आंकड़े शोध हेतु उपयोगी होते हैं। आर्थिक–नियोजन हेतु राष्ट्रीय–आय के स्तर व संरचना से उपयोगी जानकारियाँ मिलती है। राष्ट्रीय–आय की संरचना प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय–आय का आधार प्रदान करती है। प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय–आय सरकारों को आय के पुनः वितरण के लिए विभिन्न वित्तीय–सबलीकरण–कार्यक्रम (Financial-Empowerment Programme) अपनाने को प्रेरित करती है।

महत्वपूर्ण बिन्दु

- आर्थिक वृद्धि की गणना के लिए राष्ट्रीय आय का सबसे पहले प्रयोग प्रो. साइमन कुजनेट्स ने 1934 में किया।
- स्वतंत्रता से पूर्व भारत में राष्ट्रीय आय के अनुमान दादा भाई नौरोजी(1868), विलियम डिग्बी(1899), फिण्डले सिराज(1911, 1922 व 1931), शाह व खम्भर(1921), डॉ. वी. के. आर. वी. राव(1925–1929), व सी. आर. देसाई(1931–1940) इत्यादि के द्वारा लगाये गये।
- आजकल केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन (CSO) द्वारा भारत की राष्ट्रीय आय के अनुमान सन् 1956 से ही प्रतिव र्ा प्रकाशित किये जाते हैं।

- ▷ एक वित्तीय–वर्ष की अवधि (भारत में एक अप्रेल से अगले वर्ष के 31 मार्च तक) में देश के निवासियों द्वारा उत्पादित अन्तिम उपभोग्य–वस्तुओं व सेवाओं की शुद्ध मात्रा के प्रचलित बाजार कीमत पर उस देश की मुद्रा में व्यक्त मूल्यों के योग को राष्ट्रीय आय का प्रवाह कहते हैं।
- ▷ घरेलू आधार पर राष्ट्रीय आय की गणना करने हेतु एक देश की भौगोलिक–सीमा के आधार पर विचार किया जाता है।
- ▷ एक देश की नागरिकता जिनके पास होती है, उन लोगों के द्वारा भौगोलिक–सीमा में व दूसरे देशों की भौगोलिक–सीमा में अर्जित आय पर विचार होता है।
- ▷ राष्ट्रीय–आय के आंकड़ो के आधार पर समुचित विकास की रण–नीतियाँ बनायी जाती है।
- ▷ प्रत्येक देश अपने उद्योग, व्यापार एवं अन्य वाणिज्यिक क्रियाओं के विस्तार का मूल्यांकन राष्ट्रीय–आय के आधार पर करता है। राष्ट्रीय–आय के आंकड़े शोध हेतु उपयोगी होते हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. राष्ट्रीय आय का विश्व में सबसे पहले प्रयोग किसने किया?
   (अ) विलियम डिग्बी ने
   (ब) साइमन कुजनेट्स ने
   (स) फिशर
   (द) डॉ. वी. के. आर. वी. राव
2. राष्ट्रीय आय को भौतिक व अभौतिक वस्तुओं (सेवाओं) के शुद्ध उत्पादन का योग किसने बताया ?
   (अ) मार्शल ने (ब) फिशर ने
   (स) साइमन कुजनेट्स ने (द) पीगू ने
3. निम्न में से कौन सा हस्तांतरण भुगतान नहीं है–
   (अ) पेंशन (ब) बेरोजगारी भत्ता
   (स) उपहार (द) वेतन
4. राष्ट्रीय आय की विशेषता नहीं हैं ?
   (अ) राष्ट्रीय आय एक वर्ष से सम्बन्धित होती है।
   (ब) राष्ट्रीय आय प्रवाह होती है।
   (स) इसकी गणना अन्तिम वस्तुओं व सेवाओं से होती है।
   (द) अनुत्पादक क्रियाएँ शामिल होती हैं।
5. राष्ट्रीय–आय का उपयुक्त माप है –
   (अ) GNP (ब) GDP
   (स) NNP_{FC} (द) NNP_{MP}

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. भारत की राष्ट्रीय आय के अनुमान प्रतिवर्ष किसके द्वारा प्रकाशित किये जाते हैं ?
2. भारत की राष्ट्रीय आय के अनुमान किस वर्ष से प्रकाशित किये जाते हैं ?
3. अन्तिम उपभोग्य–वस्तुओं व सेवाओं का अभिप्राय संक्षेप में बताइये।
4. घरेलू आधार पर ज्ञात राष्ट्रीय आय की गणना को क्या कहा जाता है ?
5. देश की नागरिकता के आधार पर ज्ञात राष्ट्रीय आय की गणना को क्या कहा जाता है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. निम्न को संक्षेप में समझाइये:–
   बाजार कीमत पर शुद्ध घरेलू–उत्पाद, साधन लागत पर शुद्ध घरेलू–उत्पाद, बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय–उत्पाद, बाजार कीमत पर शुद्ध राष्ट्रीय–उत्पाद, साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय–उत्पाद, निजी आय, व्यक्तिगत–आय, व्यक्तिगत खर्चयोग्य–आय, प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय–आय।
2. राष्ट्रीय–आय के महत्व को संक्षेप में समझाइये।
3. राष्ट्रीय–आय के मापन की कठिनाईयों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. राष्ट्रीय आय व इसकी विशेषताओं को विस्तार से समझाइये।
   काल्पनिक संख्यात्मक उदाहरण की सहायता से राष्ट्रीय आय के विभिन्न घटकों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर तालिका

1	2	3	4	5
ब	अ	द	द	स